



# छन्द-रत्नावली

## भूमिका

छन्द-भार

जिस वाक्यरचना में अक्षरों का मात्राओं की संख्या और गति-स्थिति का नियम हो,

उसे छन्द कहते हैं, और जिस ग्रन्थ में छन्दों की शिक्षा दी हो, उसे छन्दशास्त्र का ग्रन्थकण्ड कहते हैं ।

मद और एम

जिस छन्द की वाक्यरचना का मद और एमदोदक वाक्य-रचना का मद कहते हैं ।

मद और एम में दो भेद हैं । (१) मद में एमद के मद्दोदक छन्द मद्दोदक छन्द कहते हैं । (२) एम में एमद के नियम अक्षरों का मात्राओं के अक्षर ही अक्षर वाक्य-रचना

अक्षरों का मद्दोदक छन्द में एमद के मद्दोदक छन्द कहते हैं । (३) एम में एमद के मद्दोदक छन्द मद्दोदक छन्द कहते हैं । (४) एम में एमद के मद्दोदक छन्द मद्दोदक छन्द कहते हैं । (५) एम में एमद के मद्दोदक छन्द मद्दोदक छन्द कहते हैं । (६) एम में एमद के मद्दोदक छन्द मद्दोदक छन्द कहते हैं । (७) एम में एमद के मद्दोदक छन्द मद्दोदक छन्द कहते हैं । (८) एम में एमद के मद्दोदक छन्द मद्दोदक छन्द कहते हैं । (९) एम में एमद के मद्दोदक छन्द मद्दोदक छन्द कहते हैं । (१०) एम में एमद के मद्दोदक छन्द मद्दोदक छन्द कहते हैं ।

करना होता है। (२) गद्य में कर्ता आदि अपने नियत क्रम में रखे जाते हैं; पद्य में यह नियम नहीं होता। (३) गद्य में प्रचलित शब्द अपने अधिकृत रूप में बोले जाते हैं; पद्य में कभी कभी विकृत रूप में भी बोले जाते हैं, जैसे दुःख को दूख।

बिना छन्द की रचना से छन्दोपद्म रचना में ये विशेषताएँ होती हैं। (१) छन्द का हर एक चरण अपने तोड़ में

छन्द की विशेषताएँ पूरा उत्तरता है। इससे छन्द पढ़ने में सुहावने प्रतीत होते हैं और सुस्वर गाए जाने हैं, अनपेक्षित ध्वनि लगते हैं और जब राग रागिनियों में गाए जाते हैं तब तो चित्त को मोह ही लेते हैं। (२) वाणी के तीन रूप हैं—गद्य, पद्य, और गीति। वाणी का जो प्रभाव गद्य में है, पद्य में उससे कई गुना अधिक होता है और गीति में तो उससे भी कई गुना अधिक हो जाता है। सा गीति वाणी के प्रभाव की पराकाष्ठा है। इस गीति का आधार भी छन्द ही होता है; अतएव छन्द ही वाणी में ऊँचे से ऊँचा प्रभाव ले पाते हैं। (३) छन्द रुचिकर होने हैं, उनमें जो लगना है, अनपेक्षित अद्भुत कण्ठस्थ होते हैं, उचित अवसर पर उन्हीं अक्षरों में दुहराए जाने हैं और कण्ठस्थ बने रहते हैं।

छन्दों में ऐसी मोहनी शक्ति है कि हर एक व्यक्ति उनसे प्यार करता है और हर एक अवस्था में प्यार छन्दों की संबंधित करता है। छन्द कविजनों के बहुत प्यारे हैं, यह तो जगत्प्रसिद्ध है। पर क्या कोई ऐसा





स्वप्ति भी है, जिनको ये प्यारे न लगते हैं।

देखो, एक ओर यह प्रकृति अपने प्रद्वानुभव को छन्दों  
से गाता हुआ मस्त हो होकर झूम रहा है। दूसरी ओर यह भक्त  
प्रभु-कवि के गीत गाता हुआ प्रेम में मग्न हो रहा है। तीसरी  
ओर एक धर्म शास्त्रो धर्म की व्यवस्थाओं को और नीतिशास्त्रों  
की नीतियों को प्रभावशाली बनाने के लिए छन्दों में रचना  
कर रहा है।

छन्दों की बात भी रहने दो। यह देखो, गड़रिय  
अपने मंद-स्वरों के पीछे और ग्याले धपना गीतों के पीछे  
भी भी छन्द (सद) रचने और गाने फिरते हैं। मेटों में  
अपने गीतों को अपने प्यारे छन्द रच लाते और अपने प्रामाण्य  
काट के साथ पूरा जोश से गाने फिरते हैं। खेतों में लड़के  
छन्दों से इस उस छन्द के नियत छन्द बोलते हैं। श्रमियों चरक  
का छन्द गाते हैं। बड़ी पौसती हुई छन्द गाती है  
किता में सुगम और छोड़िया छन्दों में गाती है। घर के कि  
कोर छन्दों में रचे जाते हैं और घर से छन्दियों पर।  
एकतर छन्द हैं। बड़ा मरु कहें, विरह को पीड़ा र  
के निरुद्ध का हरे छन्दों में, मृत्यु का शोक छन्दों में, कि  
छन्दों में और वैन छन्दों में गाय जाते हैं। छन्द उनसवों  
के बने बने और शोक में मन्दर का उवाच निकाल  
हुए के छन्दों और निदाने बाने होते हैं। इसी लिए  
कवियों ने सर को निरुद्ध बगते हैं।

भाए हैं, कई उर्दू में। अब मर छन्द न बनें, ऐसी कोई शोक नहीं। मसूरों या मात्राओं का जो भी तोख बोलने-गाने में शोभा पाएगा, वही एक छन्द बन जायगा। हाँ, निस्कून और हिन्दी में छन्दों के जो प्रस्ताव दिये हैं उनमें एक एक छन्द के इनने भेद बन जाते हैं, कि दूसरी भाषाओं के तथा सर्वथा नये छन्द भी उनके किसी एक प्रकार में आ ही जाते हैं। तैत्तिरीय गान्धिव का यह उर्दू पद्य —

रहिए अब ऐसी जगह, चटकर जहाँ कोई न हो।  
हममुखन कोई न हो, और हम ऊर्षा कोई न हो।  
ये दुःखदीनार ना, एक घर बनाना चाहिए।  
कोई हमसाया न हो, सौ पामशी कोई न हो।  
गदिए गर बाग़ार ना, कोई न हो नीमारदार।  
और गर मर जाइए, तो नाहमी कोई न हो।

यह २० मात्राओं का छन्द है। १२, १४ पर वर्जित है। पहली पंक्ति में 'रहिए' और चौथी में 'पामशी' का ए इन्द्र कोटा आता है। जो यह २१ मात्राओं का गीतिका छन्द का एक भेद बन जाता है। पर मध्य काल ना यह है, कि एक ही गिराओं के मंत्रों में गुरु शब्द का स्थान-भेद और गति-वर्जि-भेद से विषय विषय छन्द बन जाते हैं। जैसे १७ मसूरों के छन्द में १, ११ पर वर्जित हो और गुरु शब्द का नियम 'य म न म' है। क (क० छ०) म न म व अ र म न, न छन्दे बहुत लम्बों और लघु के सम्बन्ध है। ये तो उपम छन्दों का व्यवहारा प्रमाण।

म म गं के रूप में हो तो शिवरिणी होता है । जैसे—  
 अनुटी भागा से, सरस सुपमा से सुरस से ।  
 बना ओ देसी थी, बहु गुणमयी भू विपिन थी ॥  
 निराले फूलों थी, विविध दलवाली अनुपमा ।  
 जहाँ दूरी गाना, बहु फलवती थी विलसती ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

और १७ हां अक्षरों के समूह की ४, ६ और ७ पर सति  
 हो और गुह्यपु का नियम म म न म म ग ग के रूप में हो  
 तो मन्दभावाता होता है । जैसे—

तारे हुंसे, तम टल गया, लपटिमा ह्योम छाई ।  
 ऐसी बातें, लमकर जगें, ज्योति फैली दिशा में ।  
 दाला होये, सबल सब बातें, धारि अमोघ घृते ।  
 धीरे धीरे, दिनकर बनें, लामरी रात होनी ।

( अयोध्यासिंह उपाध्याय )

इसलिए समझाएर समूहों में भा ऊर मनि-यनि सब  
 दूसरे में । इसका हो तो उस विद्वत्पण का भेद दिखाने  
 के लिए क म म म होता उचित है और मनि-यनि मिलनी  
 दूसरी हो म म म समझाएर समूहों में सब समूह के म म म  
 भेद मानने चाहिये ।

उपलक्षण के इस समूह का नाम उपलक्षण है । इसमें



ने देने का यत्न किया है। भ्रमचलित या भ्रमप्रचलित छन्द  
 छोड़ दिये हैं ताकि विद्यार्थी कलापरपक्ष हमें न पड़े।  
 हमें विश्वास है कि इस ग्रन्थ को सम्यक् समझ कर विद्यार्थी  
 छन्द विषय से न घेचल गूढ़ ग्रन्थों को ही, बरन् नए छन्दों  
 को भी भली भाँति जान पायेंगे।

---



# छन्द-रत्नावली

## प्रथम अध्याय

### छन्द-रचना

( १ ) अथ छन्दः—छन्दो वेदोक्तान्ते, सुम्नस इत्यनेन नामे धीरे इत्यने वेदित्वा एते इयं सम्मान्य विदितो एव उच्यते अथारब्ध है—अथ एव वदं, सुम्नस्यु इत्य, मयः मयि, एति, एत्य, धीरे सुम् ।

अथ

( २ ) अथ छन्दः—छन्दो वेदोक्तान्ते, सुम्नस इत्यनेन नामे धीरे इत्यने वेदित्वा एते इयं सम्मान्य विदितो एव उच्यते अथारब्ध है—अथ एव वदं, सुम्नस्यु इत्य, मयः मयि, एति, एत्य, धीरे सुम् ।















ममत्वं हि नृणां कर्मण्युपाधायकम् ।

मन्त्रः सर्वान् ब्रह्मणः ॥ १ ॥

(३) माता पूर्वा मातामाता श्री. माता माता मातामाता।

॥ अथ शिवस्य शक्तिरूपं ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

一、  
 二、  
 三、  
 四、  
 五、  
 六、  
 七、  
 八、  
 九、  
 十、

— 10 —

— 112 —

三、



ऐसा पदे—

गैल शदा उज्जति बी गहो ।

मेला बन समाज मे रहो ॥

तो इस में खोबोला बी गति भा जाती है । गति को जान पहचानने है और यह पहचान अग्रासबदा होती है ।

(क) यति विनाम अथवा ठहराव को कहते हैं। पादके अन्त में तो सभी छन्दों के यति होती हैं, पर बड़े छन्दों में एक ही पाद में दो या तीन यतियाँ होती हैं । यति के अनुसार विनाम करते, सोलने से छन्द अधिक सुहावने बन जाते हैं । ऐसे शिखरिणी और मन्दाग्रान्ता के उदाहरण (पृष्ठ ७) ।

खरण

(१—(ब) छन्द की एक पूरी खाल को खरण, पाद का खर कहते हैं । खरण मन्दाग्र होते हैं । जैसे—

(१) ३ मन्दाग्रो का मुखति छन्द ।

सिख सिख बरत, यदि मुख यही ।

ओ मुखति है ना मुखति है ।

‘मन्दाग्र बरिद’

(२) ११ मन्दाग्रो का मूर्तिन्दा छन्द ।

धर्म के मत में अधर्म से बड़ी राखत करी ।

येन हर यत्नत मुखता में बदन धारत करी ।

एक धारी में अरुणध धारत धारत करी ।

सोकरके मन्दागि मन्दागे में बड़ी राखत करी ।

‘मन्दाग्र मूर्तिन्दा’ ।



८. ४. ६ ) श्री कुशो का मंत्र (४) विरक्त सारणी श्री कुश का  
मंत्र (५) श्री कुशो श्री कुश का मंत्र । इन सब के उद्घाटन  
कमल में ही दिए जाते हैं ।

(६) निम्नलिखित दोनों कुश हीन एक ब्रह्मणः इन्द्रियविन्दु और  
मन्त्रावली का हस्त में है ।

(१) विरक्त सारणी से विरक्त सारणी ।

सर्व सारणी सारणीविन्दु ।

अर्थात् से ही श्री कुशो मन्त्र ।

मन्त्रावली, सारणी, मन्त्रावली ।

(२) सारणी सारणी, सारणी सारणी, सारणी सारणी ।

श्री सारणी सारणी सारणी श्री सारणी सारणी ।

श्री सारणी श्री सारणी सारणी सारणी श्री सारणी ।

श्री सारणी श्री सारणी सारणी सारणी श्री सारणी ।

( सारणी सारणी सारणी सारणी )

(३) सारणी सारणी से सारणी सारणी ।

विशेष सारणी

सारणी सारणी सारणी सारणी सारणी सारणी ।

सारणी सारणी सारणी सारणी सारणी सारणी ।

सारणी सारणी सारणी सारणी सारणी सारणी ।

सारणी सारणी सारणी सारणी सारणी सारणी ।

( सारणी सारणी सारणी सारणी )

सारणी सारणी सारणी सारणी ।



## विधाता छंद

कलौषी बात है तेरे निराले प्रेम-बन्धन में ।  
 उलझ कर भक्त उलझन में जगत को पार करते है ॥  
 न होती आह नो मेरो दया का क्या पता होता ।  
 उसी से हीन जन दिन रात टाटाबार करते है ।  
 हमें तू सीखने दे आंसुओं से रोष जीवन का ।  
 जगत के नाप का हम नो यही उपचार करने है ।

( रामनरेश त्रिपाठी )

## सोमरा

(१) दिवस खालो की तुह—

स्तिमित, मोहित न सुहाय, धर्मी पिपासन मान दिन ।  
 हर दिवस रोष सुहाय, मान स्तिमित स्तिमित भली ।

( रवीन्द्र )

(२) रो रोने की तुह का मेल—

## दोहा

हमरा खालो रोने का, हमरा मोहित-बन्ध ।  
 का हर धर्मी रोने का, का स्तिमित सुहाय ।

( रामनरेश त्रिपाठी )

वसन्तको की तुह के स्तिमित खाल के रोने की स्तिमित  
 की खाली खाली तुह का जगत है । जगत—

## सूर्यदा

मन, तुम रोने के स्तिमित खाली मन का हर दया ।



(ग) उभय छन्दों में मात्रा-नियम और वर्ण-संख्या दोनों

का ध्यान रखा जाता है ।

(घ) स्वच्छन्द छन्दों में यदि केवल छंद पर ध्यान हो

और बाकी रचना नहीं जाना ।

सीधे से छन्दो-वृत्त में इन भेदों का कर्तव्य करना है ।

### छन्द

मार्जित छन्द		वर्ण-वृत्त		उभय-छंद	स्वच्छन्द
					या मुक्त छंद
सम	असम	सम	असम	विषम	
सम	असम	सम	असम	विषम	
सम	असम	सम	असम	विषम	

मार्जित छन्द काव्य में एक ही मात्रा से हो जाते हैं । जैसे—

एकमविह-य, यः । यः, यः । द्विमविह-यः, यः । यः, यः ।

अथवा यः, यः । यः, यः । इसी प्रकार वर्णवृत्त में एक वर्ण से

काव्य होना है । पर ऐसे छन्द कदा-कदा ही हैं । इन में बाँट

बलपूर्वक होना नहीं होता । कदा-कदा ही हैं । पर मार्जित छन्द का

काव्य में ही और वर्णवृत्त कदा-कदा ही काव्य में होता है ।

उ. काव्य में ऐसे वर्णवृत्त का उदाहरण—यः यः । यः यः ।

यः यः । यः यः । यः यः । यः यः । यः यः । यः यः ।

यः यः । यः यः । यः यः । यः यः । यः यः । यः यः ।

(स्वच्छन्द विवरण)



जहाँ सिद्धि होगी वहाँ दृष्टि है ।

( मैथिली शरण गुप्त )

(३) वर्णाक्षरम—सुप्रसिद्धा—( प्रथम चरण म म र य, सम  
चरण न ज ङ र ग )

फिरि फिरि भूमि कै काँ नयेनी ।

विधि यह काँन प्रवार की समेनी ।

तेन धरनि बनेन—सौगुरी के ।

सुदनि छु सुप्रिय भग्न भौगुरी के ।

( भिरगरी दास )

(४) वर्ण-क्षरम—सर्वसम्ब—( प्रथम चरण स उ स ल द्वितीय  
म म उ न ह्रीं र म भ य च कुं स उ स उ म  
तद अक्षरिदे कसक काम । दायन मरिदे नता हय ।  
नरं मूत भद ऊरुं हय । भक्तिदे कने तिल हय हय हरी  
भक्तुबदि

रमर-राम

( अक्षरिह हलिअक्षरिह मे दने—रमर रामर )

दरि, दार, दायनर, दायन, हेतु, दायन-दर ह ।

सुमरम मर, सुमरं मरिदर, मरिदर, मरिदर ह ।

मरिदर मरुद मर दायन, म, मरि, मरुद मर ।

मरिदर, मरुद ह मरिदर मर देर का मरिदर ह ।

मरिदर मरुद

## मुक्त-छन्द

मर देने हो—

बार-बार प्रिय, करुणा की किरणों से,  
 क्षुब्ध हृदय को पुलकित कर देते हो।  
 मेरे मन्दिर में आने हो देव निरम्बर,  
 कर आने हो व्यथा मार मधु,  
 बार-बार कर-कंज बढ़ा कर;  
 मन्त्रकार में मेरा रोदन  
 निकल घरा के भंसल को,

करता है क्षण क्षण—

कुसुम-कपोलों पर वे झोटा निशिर कण,  
 मुम किरणों में मधु पीछे लेते हो,  
 नव प्रमाण जीवन में मर देने हो ॥

(सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

## द्वितीय अध्याय

### मात्रिकामनोबन्ध (साधारण)

जिसे मात्रिक हस्तों के चाले चालों से मात्रा-विषय सम्बन्ध हो, वे मात्रिक मात्र-साध होवे हैं ।

(१) प्रथम

(क) शुक्र के मधुर उदय । बर में सदा उपहार ।

जबसे हस्त के मन्त्र । है शुक्र की रस-संज्ञ ।

(सामान्य विरह)

जबसे हस्त के मन्त्रिक उदय में १३ अक्षर हस्तों है  
मन्त्रिक हस्त के मन्त्रिक हो हस्त मन्त्रिक शुक्र मन्त्रिक है, जैसे

(१) शुक्र मन्त्रिक शुक्र मन्त्रिक : बर मन्त्रिक के लिये हस्त ।

हस्त के मन्त्रिक मन्त्रिक-मन्त्रिक : बर मन्त्रिक मन्त्रिक मन्त्रिक ।

(२) शुक्र मन्त्रिक-मन्त्रिक-मन्त्रिक । मन्त्रिक के मन्त्रिक ।

बर मन्त्रिक के मन्त्रिक मन्त्रिक : बर मन्त्रिक मन्त्रिक मन्त्रिक ।

- (घ) मुनि ज्ञान-मानस-हंस । अप ओग - जाग' मरार ॥  
 जग-मार्ग है दुख-जाल । सुख है कहाँ रहि काल ॥
- (ङ) नहीं रात्र है दुखमूल । सब पाप को भनुकूल ॥  
 सब ताहि ले श्रुतिराय । कहि कौन नरकहि जाय ॥
- (च) चहुँ भाग बाग नङ्गाग । भव देखिये यह भाग ॥  
 कल कल सो संयुक्त । मलियों रमै जन मुक्त ॥
- (छ) सुनि रामचंद्र कुमार । चनु जानिये यहि बार ॥  
 पुनि बेगि ताहि चढ़ाय । यश लोक लोक बढ़ाय ॥
- (ज) सह मात लक्ष्मण राम । चहुँ किये भानि प्रणाम ॥  
 भृगुनन्द आशिर दीन । रण होइ भक्त्य प्रवीन ॥
- (झ) सुनु राम शील-समुद्र । तब बन्धु है भनि शुद्र ॥  
 सम बादवानल कोप । भव कियो चाहन लोप ॥
- (ञ) नृम क्या बली बन आजु । त्रिन सोरा राजन राजु ॥  
 त्रिय जानै वनिदेव । कहि सरे मानिन मंत्र ॥

( केशवदास )

२. उद्गाता : सम्य नाम चंद्रमणि )

उद्गाता छन्द के सम्बन्धक वाद में १३ मात्राएँ होती हैं ।

१. उद्गाता नामक एक मात्रिक अंशगम छन्द भीर में  
 २. नाम-मात्र्य के कारण छन्द मात्र्य गुरुबद्ध में पद  
 उत्पन्न है । इस के अन्त में मात्राओं में ११, १३ मात्राएँ होती  
 हैं, बरन्तु इस के विना चर्या में १२, १० भीर मात्र में  
 ११, १३ । इस में इस में वरी उत्पन्न है ।

पाद दो अन्तिम श्लोके में गुरु-गुरु का कोई विशेष विधान नहीं होता । शी. ११ की माया अत्यन्त स्पष्ट होती है । जैसे—

(क) उदय होता है, और दुःखी की हाथ में ।

निद्रा होता होव कर, राम अन्तिम अन्त्याय मे ।

(ख) पानी भरित मीन है, मेम-रंध है गुरु का ।

गुरुता है सब का पानी, सुखी पर अन्तूर का ।

(ग) अन्तिम-मूर्ति-रूप है, अन्त अन्त रूप पर गये ।

अन्त गये तो शरीर पर, अन्तःकरण हो कर गये ।

(घ) अन्त में सब अन्त हो, अन्त का अन्तःकरण हो ।

अन्त गये का हाथ हो, अन्त अन्त पर अन्त हो ।

(ङ) अन्त सब अन्तःकरण है, अन्त अन्तिम विद्या मे ।

अन्त अन्त पर अन्त, अन्त अन्त अन्त से ।

(च) अन्त में ही गुरु-गुरुता, अन्त अन्तःकरण हो अन्तःकरण ।

अन्तःकरण से अन्त का, अन्त अन्त ही अन्तःकरण ।

( १० अन्त अन्तःकरण )

## १. अन्तःकरण

अन्तःकरण है अन्तःकरण पर मे । अन्तःकरण अन्तःकरण है । अन्तःकरण है अन्तःकरण है अन्तःकरण ( १११ ) अन्तःकरण १११ अन्तःकरण अन्तःकरण है । जैसे—

१) अन्तःकरण है अन्तःकरण

अन्तःकरण है अन्तःकरण ।

क्यों ध्यान-मग्न तुम बैठे,

मर कर फूलों से डाली ॥

(ग) सुन्दर फूलों की फुहियाँ,

झा-झर तुम पर झरती हैं।

मत-मस्तक वृक्ष बाढ़ें हैं,

पत्तियाँ पवन करती हैं ॥

( गुलावरन पात्रपेयी )

( ग ) क्यों छटक रहा कुस मेरा,

ऊगा की मृदु पलकों में ।

हाँ ! उलम रहा सुख मेरा,

संघ्या की घन झलकों में ॥

( घ ) उच्छ्वास और मौन में,

विभ्राम क्या भोगा है ।

रोई आँखों में निद्रा,

बन कर गवता होता है ॥

( ङ ) मग्नता की मिटन प्रतीक्षा,

कह चटती कुछ मनमानो ।

ऊगा की रक्त निराशा,

कर देगी प्रग्न कहारी ॥

( च ) फिर विश्व भोगता होये,

हे मम को बाली प्यारी ।

तुम में वृत्त मनु की हैं।

गौरी गौरी को लाली ॥

( उपशान्त प्रसाद )

( ७ ) सब घर घर को प्रज्वालित ।

हृदि मोरस देवप्रसादी ॥

मित्र हृद्य सब मन बोलता ।

जमुना-जल मारग हो जाता ॥

( प्रज्वालित दास )

## ४. हावनि

हावनि देश के हर घर चलाये हैं । ४ मकान हो गये हैं ।  
जिसमें कोई घर बना है । उस के चारों में लाल की लाली के  
कमल पर लाल आग है । जैसे —

( १ ) लाल-लाल लाल लाल लाल  
गुल को दास निज घर का ।  
जाने । मैं जाना लाल  
लाल लाल लाल लाल लाल ।

( २ ) लाल लाल लाल लाल लाल  
लाल लाल लाल लाल लाल  
लाल लाल लाल लाल लाल  
लाल लाल लाल लाल लाल ।

( ३ ) लाल-लाल लाल लाल लाल  
लाल लाल लाल लाल लाल  
लाल लाल लाल लाल लाल ।



अनुमानों की वृद्धि के कारण यह कि १४ नवंबर को ही है।  
 वर्ष (विमान, वाहन, वाहन आदि) का ही है। अनेक बार  
 के कारण ही वाहन, ११५ नवंबर है। अनेक—

1. *Phragmites australis* (Cav.) Trin. ex Steud.

॥ अथ श्रीगणेशोत्थानम् ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ਜੇ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ, ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ  
ਜੇ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ, ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ  
ਜੇ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ, ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ ਤੇ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗੇ

2. The following is a list of the names of the persons who have been  
 appointed to the various positions in the organization:

## ६. चौबोला

चौबोला छंद के प्रत्येक चरण में १५ मात्राएं होती हैं  
अन्तिम दो वर्ण क्रमशः लघु, गुरु होते हैं। जैसे—

- (क) मित्र सफल निज जीवन करो,  
हृदय बीच शुभ गुण-गण धरो ।  
गैल सदा उन्नति की गहो,  
मेला बन समाज में रहो ॥

( रामनरेश त्रिपाठी )

## ७. चौपई ( अन्य नाम—त्रयफरी )

चौपई के प्रत्येक पाद में १५ मात्राएं होती हैं। हर एक  
चरण के अन्तिम दो वर्ण क्रमशः गुरु लघु होते हैं। जैसे—

- (क) करके शिक्षा-कार्य समाप्त,  
विद्यालय की पदवी प्राप्त ।  
निर मुम ग्रामों में कर काम,  
ग्रामोणों का करो विकास ॥
- (ख) हिन्दू-युवक, उठो तुम भात्र,  
रक्षो निज समाज की श्रात्र ।  
हो तुम पर विमु की धर-वृष्टि,  
शर्मा तुम्हीं पर भारा-वृष्टि ॥
- (ग) भूमि भूँद न पीटो स्त्रीक,  
सोच भ्रमश्र देशो तुम ठीक ।  
करो न असमय का आश्रय,

जो तुम को ही सच न थाप ॥

(८) आत्म-संघटन करो सद्युक्ति,  
हिन्दू तुमों मिलेगी मुक्ति ।  
आदेशों तुम में दत्त सक्ति,  
जिन पर हो सब की अहति ।

(९) लोके सभी प्रदीप, प्रदीप,  
सो भारत माँ की रोद ।  
मिटे परस्पर के गर्ह,  
उपड़े सत्य-आय सत्ये ।

(१०) क्या साक्षर क्या सत्य-विमान,  
क्या दूरप की सी दूर आन ।  
जिस में जो जगत् के होय,  
तिष्ठ हुए हम वहीं अहीन ।

( मैट्रिक-सम हन्त )

८. गुरुत्व ( काल-सम-सुचिनी )

गुरुत्व के अर्थों पर है ११ अर्थों का ही है और अर्थ के अर्थ । जैसे—

१ अर्थ १५, १५ अर्थों के अर्थ ही है—  
संज्ञा, संज्ञा और गुरुत्व । संज्ञा के अर्थ में गुरुत्व,  
संज्ञा के अर्थ में गुरुत्व और गुरुत्व के अर्थ में गुरुत्व  
( ११ ) संज्ञा है । संज्ञा के अर्थों का ही है अर्थ के अर्थ  
में है ।

रस के आगे ? विदा विरोध,  
 हुए दम्पती फिर अनिमेष ।  
 किन्तु जहाँ है मनोनिधोग,  
 वहाँ कहीं का विरह त्रियोग ?

(मैथिली शरण गुप्त)

### २. पादाकुलक

पादाकुलक के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएं होती हैं ।  
 हर एक चरण में चार चार चौकल होने हैं । जैसे—

(क) पायस पालिय अनि अनुरागा ।

होइ निरामिय कयहुँ कि कागा ॥

संत सहहिँ दुख परहित लागी ।

पर दुख हेत भवत भमागी ॥

(ख) सेवक सुख चह मात सिधारी ।

व्यसनी धन सुभगति व्यभिचारो ॥

लोभी जस चह चारु गुमानी ।

नम दुहि दूध चहत ये प्रानी ॥

(ग) सुमति कुमति सब के उर रहहीं ।

नाथ पुरान निगम भस कहहीं ॥

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ।

जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥

(घ) निज सुख बिन मन होइ कि धीरा ।

परस कि होइ बिहीन समीरा ॥

वामनिडे विरक्ति बि. दिन विम्वस्ता ।

विन हरि भजन बि. भवभय नासा ॥

( मुत्तलीदास )

( ८ ) एत एत शर्म गुनि मग हंगे ।

एतसिज फुले बलिपस भुले ॥

जगवर होले एतु मग होले ।

एतणि न जाति डर भरदाही ॥

( बेंदाबदास )

एतदुक्त एतो वे प्रथम खरण मे एत एत खोहल है ।

एतल के लिए 'ए' एत वे प्रथम खरण हो हो एतल बरले ।

ऐरव = १ १ १ = ४ मादा या बला ( खोहल )

एत एत = १ १ १ = " " "

एतलि = १ १ १ = " " "

एतली = १ १ १ = " " "

— १ — एतलि

एतलि एत, एतदुक्त एत एत एत मेर है । एतवे प्रथम  
एत वे एत मे एत प्रथम एत है । उक्ति—

( ८ ) एतदुक्त वेत, एतलि एत,

वेत लिखलिय एत एतलि एत ।

एत होत एत एत है एतल ।

एतु होत एतलि एत एतल ।

/ एतलि एतलि :







द्विज छुति देखव भूप प्रजासत ।

बोह नहिं मात निगम अनुसासता ।

( ब ) माया सोर जावरे जोर भाया ।

ऐहिन सोर जो गाल बजाया ॥

मिथारंभ दग्ध-रत ओई ।

लावई सत बरहि सब बोई ।

( घ ) सोर सयाह जो पर-धन-हारी ।

जो बर दग्ध सो बड़ जावारी ।

जो बर ईश मसछरी जगा ।

बलि हुन सोर सुनयेन बलाया ।

( ङ ) निगलत जो सुनि-सग-सयाही ।

बलिहुन सोर बलाही पैराही ।

जो बर बर जोर दिखला ।

सो बर बर जोर बलिबला ।

( सुनसिद्ध )

१३. सुनसिद्ध

१—सो बर जोर जोर बला ।

२—सो बर ११ ११ बलाही हो ११ बर ११ हो ११ बला

सो बर हो—सो बलाह, एहि, सो बर ११ बला ११ बला

सो बर बलाह हो बर बला ११ हो ११ बलाह बला हो

सो बलाह हो सो बर बलाह हो ११ हो बलाह हो बलाह

सो बलाह हो ११ हो ११ बलाह हो ११ बलाह हो ११



‘भारत-से गुप्त पर भी संदेह,  
मुलाया सब न उनों जो गेह ॥

( मैथिली-दारण गुप्त )

( ग ) न राधा भीरो का भावान,  
नही रहता फूलो का राज ।  
बोविला रोना भल्लरधान,  
जला जगा प्यास कलु-राज ।

( घ ) दिवाले, मुल्लाहे बो फूल,  
उदय होना लिएने बो चन्द ।  
हम हमें बो भरते मेघ,  
हीर जलना हमें का मन्द ।

( मल्लिकार्जुन )

११. रस

रस रस के लोको लोको मे १३, १३ मल्लिकार्जुन होना है ।

रस १० लोको ३ लोको पर होना है । जैसे—

( क ) रस से लोको, रस का से ।  
नो लोको से लोको, रस से लोको ।  
नो लोको से लोको, रस से लोको ।  
रस से लोको से लोको से लोको ।

( ख ) रस से लोको से लोको से लोको ।

हैं गिराते न जी, गये भाँसू ॥

प्यास थी भायरू, बचाने की ।

फिर मजबू कया कि पी, गये भाँसू ॥

(ग) चाल घाले न कय, चले चाले ।

चोचलों साथ चल, पड़े भाँसू ॥

मनचलापन दिखा, दिखा अपना ।

मन चलों से मचल, पड़े भाँसू ॥

( अयोध्यासिंह उपाध्याय )

### १४. शक्ति

शक्ति के प्रत्येक पाद में १८ मात्राएँ होती हैं । पाद छ प्रथम वर्ण लघु होता है और अन्त में सगण ( १।५ ) राग ( ५।५ ) या नगण ( १।१ ) होता है । इस की १ ली, ६ओ, ११वीं और १६वीं मात्राएँ लघु होती हैं । जैसे —

(क) अर, उठ कि अर तो सवेरा हुआ ।

नहीं दूर तेरा अँधेरा हुआ ॥

बहुत दूर करना तुझे है सकर ।

नहीं शान है रात घर की किधर ॥

( रामनरेश त्रिपाठी )

१. इस छन्द की चाल ( गति ) भुजंगी नामक वर्ण-वृत्त से मिलती है । उस के प्रत्येक पाद में वर्ण एक ही गण-क्रम से आते हैं, इस में नहीं । उस में इस में यही अन्तर है ।

- (ग) शिवा शंभु के साथ देवता गरी ।  
विनायक लगायक करे दिन गरी ।  
भर्तृ राम कान्होदे के बन्द हो ।  
दिया शिव हनुमान दीव के मंद करे ।

( श्री हनुमान )

१८. विशुद्धता

संस्कृत में प्रयोग होने वाले १६ अक्षरों में से १० अक्षरों  
का प्रयोग ही प्रयोग में आता है। बाकियों में कुछ अक्षरों  
का प्रयोग ही प्रयोग में आता है। बाकियों में कुछ अक्षरों  
का प्रयोग ही प्रयोग में आता है। बाकियों में कुछ अक्षरों

- ( ४ ) एतत् सर्वं हि ब्रह्म ईशानं सुविभक्तं  
 ईश ईशानं एतत् सर्वं सुविभक्तं ।  
 एतत् सर्वं ब्रह्म सुविभक्तं हि  
 एतत् सर्वं सुविभक्तं ब्रह्म ईशानं हि ।  
 ( ५ ) एतत् सर्वं हि ब्रह्म ईशानं सुविभक्तं  
 एतत् सर्वं ब्रह्म सुविभक्तं हि  
 एतत् सर्वं ब्रह्म सुविभक्तं हि  
 एतत् सर्वं ब्रह्म सुविभक्तं हि  
 एतत् सर्वं ब्रह्म सुविभक्तं हि

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥  
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥  
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥  
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥  
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥  
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥  
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ ८ ॥  
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥  
 श्रीहरिभक्त्यो नमः ॥ १० ॥



हमारे वे प्रत्येक पाद में १६ माधायें होती हैं । यनि १२, ७  
यन्त्र १०, ६ पर होती हैं । पाद का प्रथम वर्ण लघु होता है  
और पादात्म्य में अगल बहुत प्यारा लगता है । जैसे—

(क.) गरी पैता बरता, सौरभ बनी नू.  
अनी से भी बरता, सौरभ बनी नू ।  
सनी सारी दुखित, है देख मेरे,  
हुने बी हाथ ! है, दुखें मेरे ।

( निदात्म्य शब्द हुए )

(ख.) गरी अनियेव-अमरुद, का रहे से,  
मदुनी-से सनी हुए, का रहे से ।  
यनी सविष्णु में, पछर रहे से,  
सही ही रह गये, सच से सही लगे ।

(ग.) अमरुद, देख बारी, बरा बरता ।  
यनी सौरभ हाथ का में सौरभ ।  
दिनेद पर हाथ ! नू, अमर हाथनी है  
काय का लम्ब का, काय बरता है ।

( निदात्म्य शब्द हुए )

## १२. विनय

हमारे वे हर पाद में ४० माधायें होती हैं । यनि १२, ७  
यन्त्र १०, ६ पर होती हैं । अन्तिम दो वर्ण लघु होते हैं ।  
जैसे—

(क.) हमें है दुखित देख, निदात्म्य शब्द हुए ।







८१. संज्ञा

१. हल्लाह होरहो हू, तानि हो निगारो ;  
हो अतल्ल दागबी हू, लल एउ हारो ।  
कल्ल हू हल्लाह हो अल्लाह हो मी मो मो ;  
हो कल्लाह कल्लह मीहो, कल्लाह-मूर मी मो ॥

[illegible]

हरलि निरखि तुलसिदास, चरणनि रज पारि ।  
( तुलसोदास )

प्रथम पद्य के एतौय पाद में यति उचित स्थान पर नहीं है।

२२. उपमान ( अन्य नाम—इदृषट या इदृषद )

उपमान के हर एक पाद में २३ मात्राएं होती हैं। १३ और १० मात्राओं पर यति होती है। प्रत्येक पाद के अन्तिम दो शब्द गुरु हों तो अच्छा है, नहीं तो अन्तिम घर्ण अवश्य गुरु चाहिए। जैसे—

कभी सुयश पाता नहीं, है अत्याचारी ।

निरुद्यमी होता नहीं, सुख का अधिकारी ॥

उसकी मेज़िल का नहीं, अन्त कभी होता ।

जा अन्धा है एक तो, तिस पर है सोता ॥

( रामनरेश त्रिपाठी )

२३. रोला

रोला के प्रत्येक चरण में चौबीस मात्राएं होती हैं। य ११ तथा १३ मात्राओं पर होती है। जैसे—

(क) गुँज उठे अलि कूक, उठे कोकिल कुंजों में,  
फूट फूट कर फूल, उठे पादप-पुंजों में ।

सख का यह आनंद, मधुर सौरभ कर संगी,  
गन्धवाह यह चला, तुम्हारी ओर उमंगी ॥

(ख) करो नाथ स्वीकार, आज इस हृदय-कुसुम को,

हो और क्या भेद, ब्रह्मलोभ्यत तुम को !  
 मीन की है बनी, बनी पर उन को लगे !  
 हृदयान्न है मरी, बरों से पर भी लगे !

( भिराजत शरण तुम )

(१) हो कलश-मय पर, होत निवृत्त पर कलशों ।  
 वह पर-ब्रह्म-दि कलशों तुम मरणाद विनाश ।  
 मं पर विनाश लोभ, ब्रह्म पर हो पर मरी ।  
 निवृत्त हो बड़े कलश, हृदयों कलश मरणाद ।

(२) ब्रह्म-मय विनाश विनाश, ब्रह्म-मयों होत हो पर ।  
 ब्रह्म-मय हो ब्रह्म-मयों ब्रह्म-मय विनाश पर ।  
 ब्रह्म-मयों हो ब्रह्म-मय ब्रह्म-मय होत ब्रह्म-मय ।  
 विनाश-मय विनाश, विनाश-मय विनाश मरणाद ।

( ब्रह्म-मयों ब्रह्म-मय )

(३) ब्रह्म-मयों ब्रह्म-मय होत निवृत्त पर ब्रह्म-मय ।  
 ब्रह्म-मय ब्रह्म-मय होत ब्रह्म-मयों ब्रह्म-मय ।  
 विनाश-मय ब्रह्म-मय ब्रह्म-मय होत ब्रह्म-मय ।  
 ब्रह्म-मयों ब्रह्म-मय, ब्रह्म-मय होत ब्रह्म-मय ।

( ब्रह्म-मय ब्रह्म-मय )

(४) ब्रह्म-मयों ब्रह्म-मय होत ब्रह्म-मय ब्रह्म-मय ।  
 ब्रह्म-मय ब्रह्म-मय होत ब्रह्म-मयों ब्रह्म-मय ।  
 ब्रह्म-मयों ब्रह्म-मय ब्रह्म-मय होत ब्रह्म-मय ।  
 ब्रह्म-मयों ब्रह्म-मय ब्रह्म-मय होत ब्रह्म-मय ।

( ब्रह्म-मयों ब्रह्म-मय, ब्रह्म-मय ब्रह्म-मय ब्रह्म-मय )



जब धीप्प-नाप से जनि, तपसी घतुंधरा हैं ।  
 आने पयोद लेकर, सीतल बतिल बारां से ।  
 संसार को समो घट, सोला दिचित्र क्यों हैं ?  
 बिसबी अपार माया, सर्वत्र व्याप्त-सी हैं ?  
 भृंगार प्रहृनि बल बार, प्रनिक्षण मयोन अवता—  
 बिबर को तिरा रती हैं, यह घौन सा बसिक हैं ?

( गदनमोहन निहिर )

### २५. रूपमाने

रूपमान छन्द के प्रत्येक पाद में २४ मात्राएँ होती हैं ।  
 • १४ और १० मात्राओं पर होती हैं । प्रत्येक पादों के अन्त  
 से एक सुर, एक होने हैं । जैसे—

क। बृमल धा भूमि-जल को, छर्छे विपु मर भाग  
 दित रहे ये प्रेम के हल-जल बल, बर बाल ।  
 लल-जल, तिर पर हाथ धा, भागलनि बर हाथ,  
 हा हा हा प्रहृनि अरने, भाग छुई सलाल ।

१ मीरा: २५५५ सुरा ।

(ग) एक प्रत्येक के १० एक मात्रा के भाग बाल  
 बने भन बाल धा हाथ, बाले हा भाग बाल ।  
 भाग-भाग बृमल धा हाथ, हा हा हा भाग ।

१. मल २५ २५ मल-से २ मल २५ २५ हा हा हा मल  
 है । २५ के लक्षण-से २ मल २५ २५ हा हा हा मल  
 मल के लक्षण-से २ मल २५ २५ हा हा हा मल ।



समस्तान् द्वितीयं चैव शुभं आति है त्रिं लोक ।

८। अतः सर्वत्र शुभं समस्त, है अतः सहि सार ।

आतः सह सार सार, सहियो मुनि-सार ।

है समस्त समस्त है अतः, अतः अतः ।

हैसिंह वही समस्त मुनि-सार समस्त ।

( वेदावशात् )

### २१. इत्यत्र (अथ)

इत्यत्र अतः है अतः अतः है २। समस्त लोक है । अतः  
अतः है अतः है अतः है (३।) लोक है । अतः ३ ४, ५ ६  
अतः है अतः है । अतः —

९। अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

१०। अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

१। अतः, २। अतः

३। अतः अतः अतः

४। अतः अतः अतः



दुःखों को दियेगी, प्रेम से पढ़ने लगे ।

दुःखों को दानियों में दान से गढ़ने लगे ॥

( नाथुराम दादुर )

माद-भू-सी माद-भू है, भय से तुलना नहीं ।

दल से भी दूटने पर, मिल नहीं सबको वहीं ।

जगदारी की हमारी, प्रेम में पिछला है ।

विशुद्ध भी माद-भू है, समझे दल मान है ।

( राम बारील दल )

३८. सगरी

सगरी द ह के सगरी सगरी में २३ २३ गगरी होनी है ।

( ११ सगरी ११ गगरी द ह होनी है । जैसे—

( ६ ) सगरी द ह के सगरी सगरी सगरी,

सगरी द ह के सगरी सगरी

सगरी द ह के सगरी सगरी सगरी,

सगरी द ह के सगरी सगरी

सगरी द ह के सगरी सगरी सगरी

सगरी द ह के सगरी सगरी सगरी

सगरी द ह के सगरी सगरी सगरी

सगरी द ह के सगरी सगरी सगरी

( ११ सगरी द ह के सगरी सगरी सगरी सगरी सगरी )

सगरी द ह के सगरी सगरी सगरी सगरी सगरी

सगरी द ह के सगरी सगरी सगरी सगरी सगरी



एक १५ मासों में कर सकेंगे हैं । अन्तिम दो वर्ष गुरु  
होंगे हैं । जैसे—

निज ही स्वामी रह्य में, सुरजनों की सीमा नाह ।  
 स्वरूप साधारण तो शुभ, सोइ हो प्यारे प्रभाह ॥  
 हृदय बरदासरण का, सत्य है वेला दिनाह ।  
 सत्य ही की जीव होनी, ई समझ तो विदिनाह ॥

( सम्मोह विषादी )

३८. न्याय

एक एक के अकेले पाद में २८ मांसों होती हैं । १६  
 १५ मांसों पर रहि होती हैं । यदि कण्ठाल में दो मुर  
 हो तो मांसों बढ़ जाता है । यदि पतल में एक मुर या  
 दो हो तो भी इसी की संख्या बढ़ी । जैसे —

[illegible]

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

[illegible]



, १२ माशामों पर होती है । माश प्रम यों होता है—

२, ३, ४, ५, ६, ७, ८=२८ । अन्तिम दो वर्ष लघु, शुभ  
में हैं । जैसे—

। "मेरे हृदय के हर्ष हा ! अमि,मन्तु अर हू हैं बर्षा !  
हम खेत बर देता, सतिश्व तो, हंस हम सब को पर्वी ।  
माशा खड़े हैं पास मेरे, हू मही पर हैं पड़ा ।  
निज पुत्र-जनों के मान का तो, ध्यान तुम को था बड़ा ।

। "हमारा सतिश्व भी हंस बर हू, धैर्य देना था मुझे ।  
पर आज मेरे पुत्र प्यारे, हो गया हैं क्या मुझे ?  
धर्म शुभदा का समान बर, मैं मुझे था मानना ।  
पर आज हू मैंने हुआ माशों न था पहचानना ॥

। "हा ! लीव माशों की हुई पर, सतिश्व उर होने लगी ।  
पुत्र बर माश उर था का, जब मैं बहूय रोने लगी ।  
कल बाद है : का लक्ष्मी के, समझे हू मैं था—  
लक्ष्मी लगी पर सतिश्व पुत्र को, मैं 'क हू लक्ष्मी बरती ।  
'ताम पुत्र था लक्ष्मी, लक्ष्मी के समान है,  
तु ! हू लक्ष्मी हू हुआ पर लक्ष्मी के लक्ष्मी है ।  
होने व पुत्र था बर माश, लक्ष्मी लक्ष्मी हुआ 'दिया ।  
'लक्ष्मी लक्ष्मी हू हुआ 'लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी है 'लक्ष्मी ।  
लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी, लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी है ।  
लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी है ।  
लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी लक्ष्मी है ।

बैठे रहोगे और फय तफ, भाग्य को रोते हुए ।  
( मैथिली शरण गुर )

- (च) निरुपाधि-नारायण-निरंजन, निर्भयामृत नित्य है ।  
अत्ता अनादि अनन्त अनुपम, अग्र जल आदित्य है ।  
परिभू पुरोहित प्राण प्रेरक, प्राज्ञ पूज्य प्रवेश है ।  
करतार, तारक है तुही यह, वेद का उपदेश है ।
- (छ) कवि काल कालानल कृपाकर, केतु कठणाकंद है ।  
सुप्रधाम सत्य सुपर्ण सच्छिव, सर्वप्रिय स्वर्णंद है ।  
भगवान् भायुक्त-भक्त-चत्सल, भू विभू भुयनेश है ।  
करतार तारक है तुही यह, वेद का उपदेश है ।  
( नाथुराम शङ्कर )

### ३२. मरहटा

मरहटा छन्द के प्रत्येक पाद में २९ मात्राएं होती हैं ।  
पादान्त में गुरु लघु होते हैं । यत्नि १०, ८ ११ मात्राओं प  
होती है । जैसे—

- १) यह सुनि गुरु बानी, धनु-गुन तानी जामी द्विज दुख दानि  
ताहका संहारी, दारुण भारी, नारी अनि बल जानि  
मारीच विहायों, जलधि उतायों, मायों सबल सुबाहु  
देयनि गुन पथ्यों, पुष्पनि बथ्यों, हथ्यों अनि सुरनाहु  
(अ) यक दिन रघुनायक, सीय सहायक, रतिनायक अनुहाति  
गुम गोदायारि तट, विमल पंच बट, बैठे हुने मुराति  
छवि देघत हीं तन, मदन मथ्यो मन, शूर्पनखा लेहि का

नि सुंदर मन वरि, बाहु धांज पर, सोली वचन रस्ताल ॥  
 यह धै मृति हरे, मय बल पूरे, विदित सनादय सुजाति ।  
 लक्ष्मी बहु धारति, प्रति भावनाति, हे भाये बहु भति ॥  
 तुनि प्रभु आर्द्रदल, मधुरा मंदल, ते दोऊँ गुन प्राम ।  
 लक्ष्मी बहु बीरति, लक्ष्मीसुर हति, जति अजेय स्वप्राम ॥  
 गुन ही लक्ष्मी लायक, औ लक्ष्मी लायक, उपमा दोऊँ बाहि ।  
 तुनि-आनख रीता, जगन निवेता, आदि न अन्त न जाहि ॥  
 लक्ष्मी लक्ष्मीसुर जैने मधु सुर, मांरे औ लक्ष्मीसुर ।  
 जग जग सब भांरे, औ लक्ष्मी दोऊँ, हय हि लक्ष्मी हय ।  
 ( देशवशात् )

### ३३. लौंदा

लौंदा लौंदा के लौंदा लौंदा के ३०, ३० मन्दाप लौंदा  
 ३०, ३० मन्दाप लौंदा लौंदा लौंदा ३०, ३० लौंदा लौंदा  
 लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा  
 लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा

लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा  
 लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा  
 लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा  
 लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा  
 लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा लौंदा



हंमिदुल्लाह बंदा आ. रसूल, काने बला जमाने मे ।

राजीव ने सादर सलाम भेजे, मुझे बहुत बुरा लगे ।

( सत्यमेव जयते )

३६. अज्ञात

कहती: कलक का ही एक भेद है । एक ही जगह-संगठन  
के अन्तर्गत कलक के अन्तर्गत ही है । भेद ऐसा यह है कि  
एक ही जगह के अन्तर्गत का कोई एक ही भेद है । यही—



संसार-मोहना जलमय बहना शर, पानी हो जाये मलमय ॥  
 रस हो गये दूधमय पानी हो, उसको धन बोले विद्वान् ॥  
 वेदना भावने मत हो विद्या, ब्रह्म हो जो विविध प्रकार ॥  
 ( गौरीदास याज्ञवल्की )

33. 555

हनुमन् लाल के लिये हनुमन् लाल के लिये लाल होना है । लाल  
 १. लाल लाल के लिये लाल होना है । लाल लाल के लिये लाल होना है । लाल  
 २. लाल लाल के लिये लाल होना है । लाल लाल के लिये लाल होना है । लाल

Figure 1. Schematic diagram of the experimental setup.

[illegible]







तबे हुनगये रहे बल्ल भवा, गदू गदू शुभ 'उपुडी' बा पाठ ।

(३) बोला फिर बर बाइसाह गिर,

"मेरा बाबुरा, कर भी काम ।

मही मात तुम हुनगम हो,

पूरे सुखममान हो जाय ।"

"मही सुनि-मुडक मैं गिर भी,

दे मेरे ही भाई-देव ।

महिमा बे मिस को जगु भी ही,

पूजा बरने हे बरजान ।

४। बीर उठा बाइसाह बल्लभ,

जान जान बर उठा पुहार ।

पूजा समी मे बर समी मे—

"गिर दे जगु गिरा ह मार ।"

बदल रहे बल्ल भवा बल्लभ,

ताम सुन का लाल ह लाल ।

५। लाल बरने बल्लभ ह

"गिर दे जगु गिरा ह मार ।"

६। बल्लभ बल्लभ

७। बल्लभ

विष्णु के लाल लाल ह १। बल्लभ बल्लभ ह २।  
 ३। बल्लभ बल्लभ ह ४। बल्लभ बल्लभ ह ५।  
 ६। बल्लभ बल्लभ ह ७। बल्लभ बल्लभ ह ८।  
 ९। बल्लभ बल्लभ ह १०। बल्लभ बल्लभ ह ११।  
 १२। बल्लभ बल्लभ ह १३। बल्लभ बल्लभ ह १४।



ਕਹਿ ਏਸ ਆਖੀਐ, ਧੁਲਕੁ ਸਾਹੀਬ,

ਹੁਕਮੁ ਜੀਉ ਆਖੈ, ਬਦਨੁ ਵਾਰੀ ।

ਕਹਿਰਾਇ ਬਹੁਆਰੀ ਬਰਦਾਸ਼ ਸਾਹੀ,

ਹੁਕਮੁ ਕਰਨੁ ਭਲੁ, ਘਰੁ ਵਾਰੀ ।

( ਸਲਾਮੁ ਨਿਗਾਹ )

੧੪ ਦੁਆਰਾ-ਦੇ-ਦੁਆਰੇ, ਸਭਾਨੁ ਬਹਾਰੀ,

ਕਹਿ ਕਹਿ ਮੰਦਰ, ਕਹਿ ਕਹਿ ਸਾਹੀ ।

ਕਾਹਨਾ ਦਿਲਾਸੀ, ਭਲਾ ਬਹਾਰੀ

ਭਲਾਏ ਹੁਕਮੁ ਭਲੁ, ਕਹਾਨੁ ਕਹੀ ।

ਕਹਿ ਹੁਕਮੁ ਕਹੀ, ਸਭ ਹੁਕਮੁ ਕਹੀ,

ਕਹਾਨੁ ਕਹੀ, ਕਹੀ ਕਹੀ ।

ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ,

ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ।

੧੫ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ, ਕਹੀ ਕਹੀ,

ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ, ਕਹੀ ਕਹੀ ।

ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ,

ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ।

ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ,

ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ।

ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ,

ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ।

੧੬ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ,

ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ਕਹੀ ।



८, १४ भावनाओं पर होती है । पादान्त में स्वर्ण ( ॥ ५ )  
है । जैसे—

(६) शिव दिव्यु ईश ब्रह्म, रूप भूर्ग नम,  
 तारा चंद्र दिवाकर हैं ।  
 शम्भु धामलाल, शक्ति रूपधर कलाहा  
 जल चंद्र दिवाकर हैं ॥  
 राम ईश्वर शंकर स्वभावसे हैं सदा,  
 साधक जान से दाह रहे ।  
 सुख साक्षात्कारी, ललित लालन सा,  
 सो भेदे ही साधक हैं ।

(७) हम सब सब से, जान से है, हम  
 कभी कभी बंद किया ।  
 हम सब सब से, जान से है, हम  
 कभी कभी बंद किया ।  
 हम सब सब से, जान से है, हम  
 कभी कभी बंद किया ।  
 हम सब सब से, जान से है, हम  
 कभी कभी बंद किया ।  
 हम सब सब से, जान से है, हम  
 कभी कभी बंद किया ।



१. उग्र उग्र सावित्र उग्रों के, ओं शाय को सब से प्यारे  
माने हैं, हां हां उदाहरण दियो ।

२. हरिर्गोकुल, लक्ष्मी और चौलाई उग्रों के उदाहरण  
मिल कर सिद्ध बनो कि ये सोने सावित्र, सम उग्र हैं ।

३. सिद्ध-गोकुल उग्र, लक्ष्मी अधर उग्र, किन उग्रों में हैं ?  
उग्र सुनि-सुनि होना चाहिए ।

४. नर उग्र उग्र उग्र । सुख उग्र उग्र उग्र ।  
बेगरी उग्र उग्र उग्र । सब दिवस सिद्ध सिद्ध ।

५. सिद्ध, न हो उग्र उग्र उग्र । उग्रों के सुखों में दिवस ।  
दिन सुखों में उग्र उग्र उग्र, उग्र उग्र उग्र उग्र ।

६. उग्र में न उग्र उग्र उग्र ।

७. उग्र उग्र उग्र उग्र ।

८. उग्र में उग्र । उग्र में ।

९. उग्र उग्र उग्र उग्र ।

१०. उग्र उग्र उग्र उग्र । उग्र उग्र उग्र उग्र ।

११. उग्र उग्र उग्र उग्र । उग्र उग्र उग्र उग्र ।

१२. उग्र उग्र उग्र उग्र । उग्र उग्र उग्र उग्र ।

१३. उग्र उग्र उग्र उग्र । उग्र उग्र उग्र उग्र ।

१४. उग्र उग्र उग्र उग्र । उग्र उग्र उग्र उग्र ।

१५. उग्र उग्र उग्र उग्र । उग्र उग्र उग्र उग्र ।

१६. उग्र उग्र उग्र उग्र । उग्र उग्र उग्र उग्र ।

१७. उग्र उग्र उग्र उग्र । उग्र उग्र उग्र उग्र ।

१८. उग्र उग्र उग्र उग्र । उग्र उग्र उग्र उग्र ।











हुए हाथों से ताप उठा, बोध नदी कि भोग ॥  
 (१) एगुए नहीं लौकिक सम, शोक करत शृङ्गार ।  
 विद्यानम वैभव नहीं, देखो निश्चि विचार ॥  
 (२) धर की सोभा धर है, मिय की सोभा प्रीति ।  
 दुःख की सोभा दुःख है, दुःख की सोभा मोति ॥  
 ( निश्चि दुःखों विपत्ति )

(३) दित दीख क्यों देखि हो, दित नितो क्यों मेल ।  
 दितों दितों के दित, हे न जगत् का मेल ॥  
 (४) बौद्ध एत एत का बरे, जिसे नहीं निश्चि पास ।  
 दुःख एतों दीख का, दित का दुःखों भास ॥  
 (५) मित्र दुःखों में बर भरो, दित दितों हैं मूल ।  
 बौद्धों में एतों नहीं बरा दुःखों के पुन ॥  
 ( अर्धमम सिद्ध दण्डधर )

#### ४. मातर

माते के माते माते के दुःख ४० मातर हाथ है ।  
 निश्चि माते के १० १० मातर के १० १० माते के  
 निश्चि माते के १० १० मातर निश्चि माते के १० १०  
 का निश्चि माते के १० १० माते के १० १०

(६) निश्चि के मातर मातर, दित मातर मातर है  
 निश्चि मातर मातर, दित मातर मातर है  
 (७) निश्चि मातर मातर, दित मातर मातर है  
 निश्चि मातर मातर, दित मातर मातर है



‘‘सर्व ज्ञानों के, भक्ति-योग से, उपजा सब संसार है ।

सि अक्षर वे: अक्षिष्य वा. संपर तु वरन्तर हे ॥

( नाथुराम शंकर )

८) 'नूरुल हसन' एरबि भट, 'अदिति राम जय' उद्योग ।

मुनिपति पवनदेव अहो, हृष्ट हृष्ट फौज पवन ॥

१. श्री गुरु नानक जयत, गुरुनानक जयत ।

६३३ श्री श्री राम कृष्ण-मठ-विजय, कुलसिंहास-राज्याय नमः ।

६. ३८ संस्कृत-शास्त्र-कारण, 'सुविहार' संस्कृत-शास्त्र ।

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

(सुन्दरीदास)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

3. ਦਰ ਨਿਰੀ ਕਾਹੀ, ਹਾ ' ਕਲਾ ਕਰੇ ' ਹੁਸ ਕਾ ਕਰੇ ਸਾਧਾ ਭ ਹੀ ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ श्रीगणेशोत्थानम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. 2. 3.



## अभ्यासार्थ प्रश्न

१. शय और अतिशय छन्दों के लक्षण और उदाहरण देकर  
एक पाठ्यपत्रिका अन्तर को स्पष्ट करो ।
२. होरा और सारदा छन्दों के लक्षण और उदाहरण लिख  
कर इनके भेद को ब्या करो ।
३. शृंगार और शृंगारा छन्दों में क्या अन्तर है ? एक एक  
उदाहरण देकर उत्तर को पूरा करो ।
४. शिखा और शिखरा द्वितीय के भेद को स्पष्टता निधो ।  
उनके का एक एक उदाहरण भी दो ।
५. शरी, होरा और शिखा द्वितीय का एक एक उदाहरण  
देकर इन में इन के लक्षणों को समझाने का प्रयत्न करो ।
६. शिखाश्लेषा छन्दों में शिखा का अन्तर एक से अधिक  
है ? उदाहरण दो ।
७. शिखाश्लेषा छन्दों के उदाहरण लिख कर निम्न  
प्रश्नों के उत्तर दो ।
८. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
९. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
१०. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
११. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
१२. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
१३. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
१४. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
१५. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
१६. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
१७. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
१८. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
१९. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।
२०. शिखाश्लेषा छन्दों के लक्षण क्या हैं ? उदाहरण दो ।







एता सब हरि जाय, मऊ छाया में रहिय ॥

१५ सोना लाइन पिय गये, खुना करि गये देश ।

सोना मिला न पिय मिले, रूपा है गये देश ॥

रूपा है गये देश, सोय रैन रूप गेराया ।

सेउत हो दिसताम, पिया बिन बाधु न पाया ॥

हर मिथियर बधियाय, होत दिन सब अयोना ।

बुरि पिया घर जाय, बहा बरिहो ते सोना ॥

( मिथियर बधियाय )

१६ सोना हू एबना गया, उद था निपट बदना ।

रात हुआ बुरा एत पिया, भी भी रात बजान ॥

भी भी रात बजान, बुरा का मन न पाया ।

उभय एत के हाथ सोय मिथि घर दिसताम ।

बुरे सोय सगुनाय, हाथ हू कर ही सोना ।

सोना को बुरि हाथ, दिसा बुरा एत के सोना ।

१७ सोना सोना सोना, सोना ते सोना सोना सोना ।

हाथ सोना सोना सोना, सोना सोना सोना ।

सोना सोना सोना, सोना सोना सोना ।

सोना सोना सोना, सोना सोना सोना ।

सोना सोना सोना, सोना सोना सोना ।

सोना सोना सोना, सोना सोना सोना ।

१८ सोना सोना सोना, सोना सोना सोना ।







१. तसि वीर्य रावन विरोध हनुमत्त की वनचर ।  
 कामदेव ने वन, जाय चिन्तामणि पथर ।  
 सनि राव निव दौत, युती को निर्धन कहिये ।  
 सनि समुद्र का पार, कामन विरु बंधक कहिये ।  
 २. जू ब्यास तेरहिनी, दुर्गाता भासन शिखा ।  
 बंधीसीधर हनुमं युती, सोहन हनुम निर्धन गहरी ।  
 ३. वा न बोध निजता, कामन कहि नहिं बान्ना ।  
 बोध सोन हनुमत्त, दधि आनन करि दानो ।  
 ४. सोह हनुम रति दान, कहित कवि करिदयनन ।  
 सोह हनुम रति दान, भया भी पार बौत न ।  
 ५. हनुमत्त का कह मति महुमदु, सो डो माह बान्ना डान ।  
 ६. हनुमत्त का कह मति महुमदु, सो डो माह बान्ना डान ।

### १. विनम-उत्तर

विनम-उत्तर । वही निजता का नाम है ।  
 विनम, सोह बो कहन है । ७. सोह बो कहन है ।  
 सोह बो कहन है । ८. सोह बो कहन है ।  
 सोह बो कहन है । ९. सोह बो कहन है ।  
 सोह बो कहन है । १०. सोह बो कहन है ।  
 सोह बो कहन है । ११. सोह बो कहन है ।  
 सोह बो कहन है । १२. सोह बो कहन है ।  
 सोह बो कहन है । १३. सोह बो कहन है ।  
 सोह बो कहन है । १४. सोह बो कहन है ।  
 सोह बो कहन है । १५. सोह बो कहन है ।

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५.



## ४. आर्यो

आर्यो के प्रथम तथा द्वितीय पादों में १२, १२, दूसरे  
पादों में १५ मात्राएँ होती हैं । इस प्रकार चारों  
पादों की कुल मात्रा-संख्या ४९ है । पादों के अन्तिम चरण गुरु  
हैं । इस छन्द का संस्कृत में हो अश्विज-छन्द है, हिन्दी  
में । हिन्दी में जैसे—

राम राम राम, आर्यो राम उर्यो यही नाम ।

रामो हरी राम, ऐसी देवदत्त विराम ।

( भक्तुष्टि )



ते धन, धन देन, गदि धन धो राम,  
 धन दे यहि भानि नै, नौपु सीता ॥  
 । गति छारि पुर, जारि सुन मारि सुप,  
 सुसल गो धीर धर, धन जायो ।  
 सुसल सुन धन, धन धन धन सभा,  
 धन धन धन धन धन, धन धन ॥  
 'धन सुसल' धन धन, धन धन धन धन,  
 धन धन धन धन धन, धन धन धन ।  
 धन धन धन धन धन धन धन धन,  
 धन धन धन धन धन धन धन धन ।  
 धन धन धन धन धन धन धन धन ।

विजय

'धन धन धन धन धन धन धन धन' । धन धन  
 धन धन धन धन धन धन धन धन । धन धन  
 धन धन धन धन धन धन धन धन । धन धन  
 धन धन धन धन धन धन धन धन । धन धन  
 धन धन धन धन धन धन धन धन ।

धन धन धन धन धन धन धन धन

धन धन धन धन धन धन धन धन

धन धन धन धन धन धन धन धन

१ - धन धन धन २ - धन धन धन ३ - धन धन  
 धन धन धन ४ - धन धन धन ५ - धन धन  
 धन धन धन ६ - धन धन धन ७ - धन धन  
 धन धन धन ८ - धन धन धन ९ - धन धन  
 धन धन धन १० - धन धन धन







निम्न लिखित पद्य, पद्यार्थ वा पाद किन छन्दों के हैं ?

(घ) १. धारन हरन सरन जन हेतु ।

सुलभ सकल बक्षर हुट हेतु ।

२. मगं फां तुलना उचित ही है यही ।

फिन्तु सुरसरिता कहीं नगद कहीं ।

यह मरों फां मात्र पार उतारनी ।

यह यहीं से उदितों की बरतनी ।

३. मुनिगन निफट विहंग मृग बहो ।

पाथक बाँधे निरिधि नगरी ।

हित अनहित पशु पंखों बर ।

मानुष हर हर मन विह्वल

४. लला आदि माया ज्ञेय है ।

अन रज रज रज रज रज

उलटी सुराज रज रज रज

रज रज रज रज रज

कम्मान बान रज रज

रज रज रज रज रज

५. ग्रहन काँपने हर रज रज

रज रज रज रज रज

पुष रज रज रज रज

रज रज रज रज रज

६. गिर रज रज रज रज

रज रज रज रज रज

१ ।

२ ॥

ही ॥

ही ॥

उल्ला ॥

रा ।

रा ॥



पद कमल पराग रस अनुसंगा,

नम नम-नयुर क,रै पाना ॥

हा ! हाह ! उसे भी साज, गनाया मैं ने ।

विहाराट कुपरा ही यहां, बनाया मैं ने ॥

कट जावेंगे पुष्पमूनि की, परावीनता के सब पारा ।

पांचाडों की लाइ रहेगी, होगा दुश्मास्तन का नाश ॥

सूखी सी जवरिलों कटी है, परिमल नहीं पराग नहीं।

किन्तु कुटिल नौरों के चुन्यन, का है इन परदाग नहीं।

रान लला भहु रान लला,भहु रान लला भहु रान लला॥

किन्तु गरं का शोका जाया, यद्वि गरं यह था तेरा ।

उजड़ गई फुलबारी सारी, बिगड़ गया सब कुछ मेरा ॥

## पष्ठ अध्याय

### वर्ण-सम-वृत्त ( साधारण )

जिन छन्दों के चारों पादों में वर्ण-संख्या और वर्ण-क्रम समान होते हैं, उन्हें वर्ण-सम-वृत्त कहते हैं। नीचे प्रमुख वर्ण-सम-वृत्तों का उल्लेख किया जाता है।

#### १. मल्लिका ( र ज, ग ल )

( मन्वन्ताम—समाना )

मल्लिका वृत्त के प्रत्येक चरण में रगण, जगण, गुद और लपु के क्रम में आठ वर्ण होते हैं। जैसे—

(क) कानरेश यूय नाय । लंकनाथ-बन्धु  
सोमिन्द्र सदैव समीप । देस देस

(ख) मम मे मगद होय । दैत्य को  
मार के नृमिह .

(ग) गूँजने लगे मिलिन्द । कूँजने विहंग-वृन्द ॥

हो गया सुगन्ध घात । मल्लिका खिली प्रभात ॥

( रामनरेश त्रिपाठी )

## २. श्लोक अनुष्टुप्

श्लोक अनुष्टुप् के चारों चरणों में ८, ८ वर्ण होते हैं । प्रत्येक पाद का पाँचवाँ वर्ण लघु होता है और छठा गुरु । सम ( द्वितीय तथा चतुर्थ ) चरणों का सातवाँ वर्ण भी लघु होता है । शेष वर्णों के विषय में गुरु, लघु की स्वतंत्रता है । सी स्पष्ट हो है कि यह अन्य वर्ण-सम-वृत्तों से इस अंश में कुछ विलक्षण है । जैसे—

(क) स्वप्तिवाद विरक्तों का, नौर ही कुछ यस्तु है ।

वास्यों में उनके होना, ईश का एवमस्तु है ॥

( मैथिलीशरण गुप्त )

(ख) यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत ।

(ख) अन्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजामहे ॥

( धर्मदुर्भगवद्गीता )

## ३. चम्पकमाला ( म न स, ग ) ५, ५

चम्पकमाला वृत्त के प्रत्येक पाद में भगण, भगण, सगण और गुरु के क्रम से से १० वर्ण होते हैं । यानि ५, ५ वर्णों पर होती है । जैसे—

शान्ति नहीं तो, जीवन क्या है ?

शान्ति नहीं तो, मौन क्या है ?



- क) राति ! भोगि गंहि नाथ कन्हाई ।  
साथ गोप जन आवत घाई ॥  
स्वागनार्थ सुनि आनुर माता ।  
घाई देखि मुद सुन्दर गाता ॥

( भानु कवि )

- ख) राज-राज दशरथ तनै जू ।  
रामचन्द्र भुवचन्द्र बनै जू ॥  
त्यो विदेह तुमहँ बर सीता ।  
ज्यो चकोर मनया शुभ गीता ॥

- ग) राज पुत्रकनि सों छवि छाये ।  
राज-राज सख डेरहि बाये ॥  
हीर चीर गज घाजि लुटाये ।  
सुंदरीन यहु मद्रुट गाये ॥

- घ) धानेन्द्र तब सों हंसि दोल्यो ।  
मोत मेद जिय को सब सोल्यो ॥  
आनि बारि परनस बरीइ ।  
रामचन्द्र हंसि बाह बरीइ ॥  
देखि राम बरषा श्रुतु भाई ।  
रोम रोम बहुवा दुसदाई ॥  
बात पास तन की छवि छाई ।  
राति घाँत कहु जानि न जाई ॥



## बरे-सुन-बूच

- (६) राति ! मोति गेहि राप बन्यो ।  
 लप लप उन बावन बारी ।  
 लपलप सुनि बहुर नग ।  
 बार देखि मुद सुन्दर गग ।

(नव बर)

- (७) राज-राज इराप सै ३ ।  
 राजबन्धु पुत्रबन्धु सै ३ ।  
 लो पिरे पुनूँ कर लोका ।  
 लो बहोर नगन पुन लोका ।

- (८) राज पुत्रबन्धु लो लो लो ।  
 राज-राज सब बेरहि लो ।  
 हार चोर गग बहि लो ।  
 सुंदरीन गग नग लो ।

- (९) बन्यो सब लो हति दोलो ।  
 नोन नोन हति लो सब दोलो ।  
 बलि हति राजन बर्यो ।  
 राजबन्धु हति री बर्यो ।

- (१०) देखि लो लो लो लो ।  
 लो लो लो लो लो ।  
 लो लो लो लो लो ।  
 लो लो लो लो लो ।





( फ )      बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै ।  
 परन्तु पूर्वापर सोच लीजै ॥  
 बिना बिचारे यदि काम होगा ।  
 कभी न अच्छा परिणाम होगा ॥

( मैथिली शरण गुप्त )

( ख )      अनेक प्रज्ञादि न अन्त पायो ।  
 अनेकधा वेदन गीत गायो ॥  
 तिन्ह न रामानुज बंधु जानी ।  
 सुनो सुधी केवल ब्रह्म मानौ ॥

( केशव दास )

( ग )      अनन्तकल्याणि, सुधास्वरूपे ।  
 मज्जीयता दो मर लेखनी में ॥  
 विनुद्ध वीणा लय माधुरी से ।  
 बनू कृपा-पात्र मनस्वियों का ॥

( श्यामाकान्त पाठक )

( घ )      निजेशया भूतल देहचारी ।  
 अधम-बहारक धर्मचारी ॥  
 चले दशमोयहिं मारिये को ।  
 तपी ब्रती केवल पारिवे को ॥

( ङ )      चले बली पावन पादुका ले ।  
 प्रदक्षिणा राम-सिपाहु को दे ॥  
 गय न नंदीपुर ग्राम कीनों ।

का उच्चारण लघुवत् होगा ।













- (ग) निराकार ! आकार तेरा नहीं है,  
फिस्ती भीति का मान मेरा नहीं है ।  
सखा ! सद-संघान से तू पड़ा है,  
मुझे तुच्छता में समाना पड़ा है ॥
- (घ) मुझे बंध-बाधा सनाती नहीं है,  
मुझे सर्वदा-सुखि पानी नहीं है ।  
प्रभो, शंकरा नंद आनंद-दाता,  
मुझे क्यों नहीं आपदा से छुड़ाना ?
- (ङ) कहुँ शोभना हुंदुनी दीह पात्रे ।  
कहुँ भीम भंकार कनीटै सात्रे ॥  
कहुँ मुंदरी बंदु पीना यज्ञात्रे ।  
कहुँ किररी किररी लै सुगात्रे ॥
- (च) कहुँ नृत्यकारो नचै शोभ सात्रे ।  
कहुँ भाँट पोटे कहुँ मल गात्रे ॥  
कहुँ नाट भाठ्यो करै नाच पात्रे ।  
कहुँ लाहिनी बेड़िनी गीत गात्रे ॥

( बेदावदास )

१—सब कुछ देने पात्री ।

१—उद्युगद पड़ा आधना ।

२—एक राग है ।

३. ४—संघन स्वभाव वाली नद जति को नाचने माने  
ती त्रिपती ।



१६. तोटक ( स स स स )

तोटक वृत्त के हर एक चरण में चार सगण (॥ ५ ) के कम से १२ घर्ण होते हैं । जैसे—

( क )      घरणीश घनेश जनेश रहा ।  
 अनुकूल सदा अपिलेश रहा ॥  
 सय से बढ़िया, घटिया कय था ?  
 इस भाँति बढ़ा जय था तय था ॥

( ख )      अथ लों न कहीं यह देश मिला ।  
 इंस का न जिसे उपदेश मिला ॥  
 उस गौरव के गुण अमृत हुए ।  
 गुरु के गुरु, शिष्य समस्त हुए ॥

( ग )      विगड़ी गति वैदिक धर्म बिना ।  
 सुख-हीन हुआ दुःख कर्म बिना ॥  
 हठ ने जड़ धी अविकाश किया ।  
 फिर बाल्य ने बल नाश किया ॥

( घ )      चिथड़े तक भी न रहे तन पै ।  
 धिक धूलि पड़े इस जीवन पै ॥  
 अवनोक अमङ्गल दल हुआ ।  
 यस्त भारत का रस्त भङ्ग हुआ ॥

( नाथूराम शङ्कर )



### १७. इन्द्रवंशा (त त ज र)

इन्द्रवंशा वृत्त के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

- (क) आये जयै सीय समेत राम है ।  
छाये महा मङ्गल औघ धाम हैं ॥  
नाता भरत्यादि करें प्रनाम हैं ।  
बाचा किये पूरित सर्व काम हैं ॥

(गदाधर भट्ट)

- (ख) तातां ! जरा आ लख नृ विचारि हो ।  
फो मार फो दे मुख दुःख जीव ही ॥  
संग्राम भारी कर आज यान सों ।  
रे इन्द्रवंशा ! लर फौरवान सों ॥

(भानुकावि)

### १८. मोतियदाम ज ज ज ज

मोतियदाम वृत्त के हर एक चरण में चार जगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं। जैसे—

- (क) गये तहँ राम जहाँ निज मान ।  
फही यह बात कि है यन जान ॥  
फहू जनि जी दुख पायहु माइ ।  
सु देहु अशीर मिली फिरि आइ ॥

(केशवदास)



रमापति विष्णु असंग अनूप ।

घंयों पैहि कारण वामन रूप ॥

( देवीप्रसाद पूज )

१९. वंशस्थविल ( ज त ज र )

वंशस्थविल वृत्त के प्रत्येक पाद में जगण, सगण, जगण और रगण के क्रम से १२ घर्ण होते हैं । जैसे—

- (क) हरीनिमा का सुविशाल सिंधु सा ।  
मनोहता की रमणीय भूमि-सा ॥  
विचित्रता का शुभ-सिद्ध-पीठ सा ।  
प्रशान्त वृन्दावन दर्शनीय था ॥
- (ख) अतीव उत्थाणित ग्वाल-गाल हो ।  
सवेग जाते रथ के समीप ये ॥  
परन्तु होते भक्ति ही मलोंन ये ।  
न देखते ये जब ये मुकुन्द को ॥
- (ग) अनेक गाये तृप्त त्याग दीहती ।  
सदास जाती घर-दान पास थी ॥  
परन्तु पातो जड़ थी न श्याम को ।  
पिपादिता हो पड़ती नितान्त धा ॥
- (घ) निकालती जा जल कूप से रहीं ।  
स-रज्जु सों भां नज कूप में पड़ा ॥  
अनूप हो भावुर दीहती गई ।

१, २—घ और ए का उच्चारण लघुपद होगा ।

मज्जांगता यत्तुम को विद्योक्ते ॥

- (६) ययस्क यूदे यह बाल बालिका ।  
सभी समुत्कण्ठित श्री अधीर हो ॥  
सवेग भाये दिग 'मंजु' यान के ।  
स्व-लोचनों की निधि-चारु शृङ्गे ॥

- (७) स्वरूप होना जिसका न भय है ।  
न शक्य होने जिसके मनोज्ञ हैं ॥  
अर्णव व्यास बनता सदैव है ।  
मनुष्य सो भी गुण के प्रभाय से ॥

- (८) सदा करूँगा अपमृत्यु भामता ।  
समीन दूँगा न सुगन्ध-धन से ॥  
कभी करूँगा अवहलता न मैं ।  
प्रधान धर्माण परांपकार की ॥

- (९) प्रसाद होने तक शेर भ्राम के ।  
सरक होने तक एक भी शिर ॥  
सशक्त होने तक एक शोभ के ।  
किया करूँगा दिन सर्वमूल का ॥

- (१०) मुहुन्द चाहें पद-पद के बने ।  
सदा रहें या वह गोप वेश के ॥  
न तो लज्जेने प्रह्वभूमि भूल दें ।  
न भूल देंगी प्रह्वमेदिनी उन्हें ॥

२०. मोदक ( म म म म )

मोदक वृत्त के प्रत्येक चरण में चार भगन के ध्वन से १२ पं होने हैं । जिसे—

(क) हो निज देश-मुबारक सदा, तब ।  
उन्नति के कुछ काम करो जब ॥  
कैयन् हैं उपदेश कृपा सब ।  
भूत भिटे मन-मोदक से क्या ?  
( रामनरेश विपाठी )

(ख) राजन मैं तुम राज बड़े मति ।  
मैं मुख मार्गों' तो' इंदु महामति ॥  
देव महापरा ही सुर नायक ।  
हैं यह कारण रामहि तापक ॥

(ग) शोभन दीर्घ बाहु विराजत ।  
देव सिंहाने अरेखने' लाजत ॥  
ऐतिन की महिराज बरानदु ।  
हैं हिराकतिन की ध्वज भाजदु ॥

(घ) राघव की पते माँखु सौंदर ।  
भाबु बनी पलंग विर अर ॥  
राबत-रंग हमें हाने सर ।  
बाज बहा तिन को हम को सब ।  
( देवप्रसाद )

१, २—ये पंक्तें अनुप्रास पदे जायेंगे । ३—उपपाते हैं ।

४—राघुपति उद्योग होगा । ५—विनीतम् ।



मिल गई यदि ये विधि योग से ॥  
पर जिसे न मिलि कविता-मुखा ।  
रसिकता सिकता-सम है उसे ॥  
(च) चतुर है चतुरानन सा वही ।  
सुमग भाग्य-विभूषित भाल है ॥  
मन ! जिसे मन में पर-काव्य की ।  
रुचिरता चिर-ताप-करी न हो ॥

(रामचरित उपाध्याय)

(छ) यहु-विनोदित थीं ब्रज-शालिका ।  
तरुणियाँ सय थीं तृण तोड़ती ॥  
घलि गई यहुवार दयोवती ।  
लख अनूपमता ब्रज-चंद की ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

२२. तालनयन ( न न न न ) ६, ६

तालनयन वृत्त के चारों चरणों में चार चार नगण से होते हैं। अर्थात् प्रत्येक पाद में १२ १२ लघु घण होते हैं। ६, ६ घणों के पाद विराम होना है। जैसे—

(क) विशिख सरस, परम दुखद ।  
पुखर वचन, कह न सुखद ॥  
कर सुकयन, हृदय-हरन ।  
सुखद बभूव, सरस वचन ।

(रामचरित)



संतति उपजन ही निशि वासर ।

साधन तन मन मुक्ति नहीधर ॥

(ख) श्री रघुवर तुम ही जगनायक ।

देखहु दशरथ को सुखदायक ॥

सोदर सहित पिता-पद पावन ।

पंदन पिय सवहीं मनभावन ॥

(ग) मूरज चरण दिभोरण के अति ।

आपुहि भरत पर्यासि महामति ॥

हुंदुभि-धुनि धरि कै यहु भेवन ।

पुष्प धरपि हरपे दिवि देवन ॥

(घ) राम चलत नृप के युग लोचन ।

धारि भरति भये पारिद्-राचन ॥

पावन परि ऋषि के सज्जि-भोजहि ।

'केशव' उठि गये भोतर भोजहि ॥

( केशवदास )

२५. वसन्ततिलका ( न न उ उ, ग ग )

वसन्त तिलका कृष्ण के प्रदेह चरण में लगाना, भगवत्, दो अंगन और दो गुरु के श्रम में १४ पद होते हैं । जैसे—

(क) सोना महा-अद्भुत जान पदार-वेष्टा ।

सोम न दान स्वर्ग-निज नेत्र से पी ।

२—दादल को सो जाना पाले । १, ३—पुनः पुनः उद्वारण करना चाहिये ।



कोई दिशद-वश तो पड़ना दिखाना ॥

कोई प्रयोज कर है परितोष देना ।

है किन्तु सत्य-हितकारक व्यक्ति कोई ॥

आँखों बनूप छवि है जिस्तने विलोकी ।

धंसी-निनाद मन वे जिनने सुना है ॥

देना दिशार इत यानिति में जिन्यों ने ।

कैसे मुकुन्द उनके उर में बँधेने !

( अयोध्यास्थित उपाध्याय )

२६. मुकुन्द ( म न प्र उ. ग ल ) ८, ६

मुकुन्द कृत के अष्टोत्तराश्व में लगन, भगन, दो जगन और गुरु सप्त के बान में १४ वर्ण होते हैं । आठ और छः वर्णों के बाद विराम होता है । जैसे—

सन्तुष्ट आरु पर निरु रहो महारं,

है प्रीति, मन्त्रम बरों, उन्मत्त प्रहारं ।

है कौन तेनु पर हो, बर जो बराय,

हो नष्ट नष्ट एवरे, तुम वे मन्त्रारं ।

( निजगणनरत्न गुरु )

७. बानर ( र उ र उ र )

बानर के चारों चरणों में लगन, भगन, दो जगन, और रगन के बान में १५, १५ बानर होते हैं । जैसे—

(क) बानर शृंगार एक बानर होत होत को ।

जानकी मन्त्रे छिष्ट बानर गन रंग को ।



- (ब) कुछ में गुणल लाल राखिका विराज ही ।  
 बुन्द गोपिकाय के सुगम-रुख लाज ही ॥  
 नय में उमङ्ग लङ्ग दीन धेनु बाज ही ।  
 लच्छरी विनोकिदण्ड मच्छरी सुलाज ही ॥  
 (गदावर मष्ट)

२८. शशिकला (न न न न ल) ६, ९

शशिकला के प्रत्येक पाद में चार नगम और एक लगन के स्वन से १५ वर्ण होते हैं। अर्थात् १४ लघु वर्णों के अनन्तर एक गुरु वर्ण होता है। छ और नो वर्णों के बाद विराम होता है। जैसे—

- (क) कहुँ द्विजगन, निहि सुख सुनि पड़लौ ।  
 कहुँ हरि हरि, हर हर रह रहलौ ॥  
 कहुँ सुग-रीसु, सुग-रनि पैर निर ही ।  
 कहुँ सुनि-गन, विनवन हरि हिद ही ॥
- (ख) बन महुँ बिकट विविध दुख सुनिने ।  
 निरि गहवर, नग अगन के सुनिने ॥  
 कहुँ अहि हारे, कहुँ निरिखर चर ही ।  
 कहुँ दब-दहन बुलइ दुख दह ही ॥  
 (किसावदास)

\* इस के प्रत्येक पाद में सात बार गुरु लघु (५।) के अनन्तर एक गुरु होता है। १—लाज कर । २—रीस । ३—नर हो गई ।

१—जाने हैं । २—रोसी का दूध ।



बहु यजन करा के, पूज के निजों को ॥

यह सुजन निला है, जो मुझे यत्न-द्वारा ।

प्रियतम, वह मेरा, कृष्ण प्यारा कहाँ है ?

(ब) मुखरित करता जो, सन्न को या शुको सा ।

कलख करता था, जो खगों सा यनों में ॥

सुध्वनित पिक लौं जो, घाटिका या यनाता ।

वह बहुविधि कण्ठों, का बिघाता कहाँ है ॥

(छ) धन धन फिरती हैं, खिन्न गाये अनेकों ।

शुक भर भर बाँख, भौन की देखता है ॥

सुधि कर जिसकी है, शारिका नित्य रोती ।

वह निधि मृदुता का मंझु मोती कहाँ है ?

(ज) यदि दिन कट जाता, घीतती थी न दोषों ।

यदि निशि टलती थी, धार या कल्प होता ॥

पल पल अकुलाती, ऊबती थी यशोदा ।

रट यह रहती थी, क्यों नहीं श्याम आये ?

(झ) प्रति दिन कितने ही, देवता थी मनाती ।

बहु यजन करती, विप्र के वृन्द से थी ॥

नित घर पर नाना, ज्योतिषी थी बुलाती ।

निज प्रिय सुत आना, पूछने को यशोदा ॥

(ञ) गृह दिशि यदि कोई, शीघ्रता साथ लाता ।

१—देवताओं को ।

२३, —रात । ४—आठ दिन, चार अरब पत्तोंस करोड़ वर्ष ।

















इच्छा के अनुकूल कार्य सय में, हूँ साध लेता सदा ॥  
 जाता है कहते मनुष्य यश में, है काल कर्मादि के।  
 होती है घटना-प्रवाह-पतिता-स्वार्थानिता यंत्रिता ॥

(च) ऊँचे दाडिम से रसाल-नय ये, औ आध्र मे शिरापा।  
 यों निस्स्रोथ अमंल्य पादप कसे, वृन्दावती बीच ये ॥  
 मामो ये अवलांकते पथ रहे, वृन्दावनाधीश का।  
 ऊँचा शीश उठा मनुष्य-जनता के तुल्य उत्कंड हो ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

(छ) सायंकाल हवा समुद्र-तट की, नैरोग्य कारी यहाँ।  
 प्रायः शिक्षित सभ्य लोग नित ही, आते इसी से यहाँ ॥  
 बैठे हास्य-विनोद-मोद करने, स्तानंद वे दो घड़ी।  
 सो शोभा उस दृश्य की हृदय को, है नृमि देती यड़ी ॥

(ज) छोटे और बड़े जहाज जल में, देखो वहाँ वे खड़े।  
 सो भी दृश्य विनिम्र, किन्तु हम का, वे हानिकारी बड़े ॥  
 ले जाते घर-वस्तु देश-भर की, जाने कहाँ की कहाँ ?  
 लाते केवल ऊपरी चटक की, चीजें विदेशी यहाँ ॥

(कन्हैया लाल पौदार)

३६. स्रग्धरा (म र भ न य य य) ७, ७, ७

स्रग्धरा वृत्त के प्रत्येक चरण में मगण, रगण, भगण,  
 नगण और तीन यगण के क्रम से २१ वर्ण होने हैं। हर सानधे  
 वर्ण के बाद विराम होता है। जैसे —

नाना फूलों-फलों से, अनुपम जग को,

घाटिका है विचित्रा ।

मोक्ष है मरुतों हो, नहुष दुख मरुत,

बोकिना मरुतों ॥

बोने भी है मरुतों, पर-वन हरे,

ने मरुत ब्रह्मणी ॥

बोने है एक मरुत, सुवि हन मरुत बो,

ने मरुत ने एक है ॥

( रामनेरा विरही )

### मरुत

मरुत विरही विरही एक ही मरुत नहीं है । पर से मरुतों  
मरुत है बने मरुत-मरुत ही मरुत बो बने है । एक एक मरुत  
मरुत मरुत मरुतों का ही मरुत बने है । यह मरुतों है कि  
मरुतों के बने बने बो मरुत मरुत विरही है ।

३४. मरुत मरुत । ३ मरुत

मरुत मरुतों के मरुत मरुत ने मरुत मरुत मरुत मरुत के  
मरुत मरुत मरुत मरुत है । मरुत -

- (३) मरुत मरुत है मरुत मरुत मरुत  
मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत ॥  
मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत  
मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत ॥  
मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत  
मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत मरुत ॥

१-१२ मरुत-ने मरुत मरुत मरुत मरुत ॥







हो निजि नर गन्धर्व गह्वरी ।  
 गेह लगे चक्रे मरी ।  
 लुकी लगे आग बंद लगी ॥  
 मनु मान होन किराट  
 तु हुनै लगेन मर चली ।  
 मर य मरतः सुनिगत  
 मर मर मर मर ॥

( विनायक राव )

एक हो' मर मर ! त्रि जीवहि,  
 मर मर त्रि जीवो मर !  
 एक हो, एक हो, मरुन्दन,  
 मर हो, मर हो मर !  
 मर हो' मर ! त्रि जीव हो,  
 मर मर मर मर मर मर ।  
 मर मर ! मर मर,  
 मर मर ही मर मर मर मर ॥

मर मर मर मर हो मर मर मर मर मर मर ।  
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर ।  
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर ।  
 मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर ।  
 ( मर मर मर )

मर मर मर मर मर मर मर मर मर मर ।



१० पूर मोर भनि सांभित क्यामजुं मैसी घनी सिर सुंदर खोटी ।  
 गेलन भाव सिरें अनता पग पैजनी बाजव पीरो" कछोटी ॥  
 ११ छवि को रमकात पिहोवन धारन काम बला निज खोटी ।  
 काम से भाव बड़े सजनी हरि-साथ सा ले गयो भाखन राटी ।

( रसमान )

१२ हुलर धी लुगाध बने हुलही तिय सुंदर मंदिर भाही ।  
 गहरि सोम सदै मिलि सुंदरि, देर जुदा जुनि धिय पढ़ाही ॥  
 गन बो" रूप निहारनि जायके बंधन के नग की परछाही ।  
 सने" सदै मुधि भूति सग पर देखि रही पन टारनि नाही ॥

( हुलसीदास )

१३ सीत राम ह हौंता सर मे मनु जेने बो भाहि सने बंधु माया ।  
 सोनी राटी ॥ लरी दुपरी भर सोय हलाल बा सदि" सना ।  
 सा सरो जिउ दुंदर एह रहरी खबि सी समुदा नमिनामा ।  
 हुलर सोर हलाल से भाव हलाल भावने काम सुदामा ।

( लोकादर )

१४ भाव हो लुगाध काम हलालि" का रूप बर बलदे ।  
 हुलर से हल ललाल भाव लु ललाल बेदि हलाल ललाल ।  
 लो ललाल लु लु ललाल ललाल ललाल ललाल ललाल ।  
 ललाल ललाल ललाल ललाल ललाल ललाल ललाल ललाल ।

( लोकादर )

१-१-१-१-१ ललाल ललाल ललाल ललाल

१-१-१-१-१ ललाल ललाल ललाल ललाल



संयमशील बनो सतिमान

सुधार करो प्रण ठान बटोर ॥

खेत करो, पिक जीवन है

यदि नाम मिला जग में कुलंदोर ।

छोड़ एगो बकपाद एगो पस

भारत-उदति-चंद्र-चबोर ॥

( रामनरेश त्रिपाठी )

४०. दुर्मिल सर्वदा ( ८ सगण )

( अल्पनाम, चंद्रकला )

दुर्मिल सर्वदे के प्रत्येक पाद में आठ सगण ( ११५ ) के  
रस से २४ पद होने हैं । जैसे—

(१) उदयेत अश्वेक सुते मन बां

रखि बं बलुसल सुधार सुबं ।

धर धनक सपदिधि मंत्र अये

एक देर सुसार बिलार सुबं ।

दुर्गमोद धर मरण दये

धनधन सुदुर्ग विचार सुबं ।

बारे सुंदर दान दित ३ गे

एक कोर गिरे दूध मर सुबं ।

( अल्पनाम रसक )



(च) दरसे यिन मोहनी मूरति

लालचीलोचन मेकुटि कातर से।

तरसे ही रहें न लहें पतिर्याँ

पिय प्यारे, तिहारें लिखी कर से ॥

कर सेव यड़ों की बितायौ

चहौं दिन पै भरण द्रोपदीअंबर से।

यरसे यिन नैन रहें यरजे

न रहे यन सावन यादर से ॥

( अर्जुनदास केडिया )

(छ) अफड़े हम को तुम खूब रहो,

परवान हमें इस बंधन की ॥

कुछ सोच नहीं हम को इसका

नित है बढ़ती तनुता तन की ॥

रहता तुम में अनुराग जिसे

कुछ भीति उसे न किसी जन की।

तुम हो रहते जिसके मन में

खलता उस को न व्यथा मन की ॥

( गोपालशरणसिंह )

१, ९—इन घर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

१—इस घर्ण का उच्चारण लघुवत् होगा।



जरा जब भावै ज्वरा की सहेली ।

मगै सब देह दत्ता जिय साय

रहै दुरि दौर दुराशा बकेली ॥

(केशवदास)

(ग) बकेली हीं है मुनि को यह

याल तज भय-भीत न रंचैं लखावै ।

मनौ कुलहीं रघुवंत को चारु

हुंयों जिय नेह-लता उलहोवै ॥

दलै गज-गंड-थलीन की ग्रंथि

जब घनु घोर फठोर भचावै ।

“धियो बहु धीरन सो चहुँ तोर

चलावत मो उर कौतुक छावै ॥

(सत्यनारायण कविरत्न)

४२. अरसात सवैया ( ७ भार )

अरसात सवैया के प्रत्येक पाद में सात भगन और एक  
गुण के क्रम से २४ वर्ण होते हैं । जैसे—

(क) भाव भला उस के मन के

कित भाँति कहूँ वह है न बखानता ।

ली न कभी उस ने सुब भी

अपना जन क्या न मुझे वह मानता ॥

२२—जरा भी । २३—कुल का नाशक ।

२४—पहुँचित करे ।



(घ) सोहन सर्वसहा सिव-सैल तें  
 सैल हुकाम लतान-उमंग तें ।  
 कामलता विलसैं जगदंब तें बय हु  
 संकर के बरवंग तें ॥  
 मंकर-अंग हु उत्तम अंग तें उत्तम  
 अंग हु चंद प्रसंग तें ।  
 चंद जटान के जूटन राजत जूट जटान  
 के गंग-तंग तें ॥  
 ( भर्तृहरिदास केडिया )

(ङ) साहस कै दस कै रिस कै जय माँगी  
 बिदेस-बिदा नृदु यानि सौं ।  
 सो सुनि घाल रही मुरझाइ दही घर  
 बेलि ज्यों धीर दवानि सौं ॥  
 नैन गरो हियरो भरि आयी पै थोड़ न  
 आयी क्यूँ वा सुजानि सौं ।  
 सारैं अजौं हिय माँस गड़ी वे थड़ी  
 अथियाँ उनड़ी अनुवानि सौं ॥  
 ( अलंकार आराध )

(च) जो अनवेद्य अनादि अनन्त  
 अखंड अनन्य अनूप अकाम है ।  
 जाहि निरूपहिं वेद सदा  
 कहि नित्य निरोह निरंजन नाम है ॥

जो जनरजन दुष्ट-विमंजन

राजन-गर्भ 'हरी' सुखधाम है ।

सोर त्रिलोक को नाथ भली,

दृष्टमानुशली की गली को गुलाम है ॥

( विधोनी हीर )

(७) मानन है अरविन्द फूले

भली-गन ! भूले कहा मैंहपने हो ।

कीर तुम्हें कहा बाई लगी

भ्रम बिच के मोठन को ललचात हो ॥

'दामजू' ध्याली न बेनी-बताव

हे पापी कलापी कहा इनपान हो ।

बोली बालन बाजनी चीन

कहा निगने मित्रि प्यार जान हो ॥

( मिच्छादीराम )

(४) व्यास पगे विष व्यादे सो व्याली !

कहा इमि कीजन मान मरोर है ।

हे 'जनजाकार' वे निमि-बामर तो

छवि-वाजिय को नासो गई ॥

हे मन-मोहन मोहनी वे तो पर

१—२८ वे सभी वर्ग कपुचन माने और वड़े जायते । इन वर्गों में भी कई बड़ बाल ऐसे हैं जहाँ गुरु वर्गों का उच्चारण कपुचन बाला बड़ेगा । विद्वान्नी इसी प्रकार सब उन्हें सब बूढ़ होने, बड़ हवे विभाव्य है ।

































